शिक्षा की पुनर्कल्पना

शुभम गर्ग और विष्णु गोपाल मीणा

जनसांख्यिकी

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र सवाई माधोपुर के रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान और ज़िले के खण्डार ब्लॉक के आस-पास के गाँवों में कार्यरत है। ज़िले की कुल आबादी लगभग 14.5 लाख है, जिसमें लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 897* महिलाओं का है। ज़िले की लगभग 80 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। ग्रामीण सवाई माधोपुर में महिला और पुरुष की साक्षरता दर (7+ वर्ष) क्रमश: 42.40 प्रतिशत और 79.40 प्रतिशत है। 2006 में पंचायती राज मंत्रालय द्वारा इस ज़िले को पिछड़ा घोषित किया गया था।

सवाई माधोपुर में काफ़ी हद तक कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है। गुर्जर (पारम्परिक रूप से चरवाहे) और मीणा (एक अनुसूचित जनजाति लेकिन अब मुख्य रूप से कृषि करने वाले) यहाँ के बहुसंख्यक समुदाय हैं। अन्य जाति समूहों की एक छोटी लेकिन महत्त्वपूर्ण आबादी है— माली, बैरवा, हरिजन, भोपा, जग्गा और कुछ विमुक्त जनजातीय समूह जैसे कि गड़िया लोहार, मोगिया, बावरिया, कंजर आदि। पर्यटन एक अन्य क्षेत्र है जिसमें ग्रामीण आबादी क्लीनर, रसोइया या पर्यटक गाइड के रूप में कार्यरत है। उनमें से कुछ अपने स्वयं के ढाबे भी चला रहे हैं।

महामारी के प्रभाव

यह देखा गया है कि, ऐतिहासिक रूप से, प्रत्येक आपदा हमारे आस-पास अधिक असमानता और अन्याय पैदा करके राष्ट्र के सामाजिक ताने-बाने को कमज़ोर करती है। महामारी और उसके परिणामों के कारण हम सभी के जीवन में एक ठहराव आ गया है। वर्तमान में भारत विश्व स्तर के कोविड-19 मामलों में दूसरे स्थान पर है। अब हम ग्रामीण क्षेत्रों में भी वायरस का प्रवेश देख रहे हैं। सबसे ज़्यादा प्रभावित वे लोग हुए हैं जो पिरामिड के निचले भाग पर हैं, यानी हमारे समाज के सबसे कमज़ोर और हाशिए पर मौजूद समूह। महामारी के दौरान आजीविका के नुकसान के कारण यह समुदाय बहुत संकट में आ गए हैं।

महामारी से प्रभावित बच्चों में से सबसे अधिक प्रभावित वंचित समुदायों के बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, हुए हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि बच्चे अपने सीखने की जगहों से दूर रहने पर मजबूर हो गए हैं। वंचित परिवार के बच्चों के लिए स्कूल एक सुरक्षित स्थान होता है जो उन्हें न केवल ज्ञान और आवश्यक जीवन-कौशल प्रदान करता है, बल्कि विभिन्न शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से अपने सहपाठियों के साथ जुड़कर उनकी मनो-भावनात्मक ख़ुशहाली को भी सुनिश्चित करता है। बच्चों के जीवन के इतने महत्त्वपूर्ण विकासात्मक चरण में इन सब जगहों का अभाव उनके सीखने और समग्र विकास के लिए एक ख़तरा है।

वर्तमान में, यह बच्चे (ज़्यादातर लड़कियाँ) अपना अधिकांश समय घर के कामों में और आमदनी दिलाने वाली गतिविधियों जैसे कि खेती, पशु-पालन, सब्ज़ी बेचने आदि में बिताते हैं। उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा की एक छात्रा सुनीता ने अपने परिवार को सहारा देने के लिए सब्ज़ियाँ बेचीं, क्योंकि लॉकडाउन के दौरान उसके दो बड़े भाइयों को उस होटल से निकाल दिया गया था जहाँ वे काम करते थे।

बच्चे शिक्षा से जितना दूर रहेंगे, स्कूल खुलने पर उनके वहाँ वापस आने की सम्भावना उतनी ही कम होगी। ऐसी परिस्थितियों में, सम्भव है कि बच्चे स्कूल छोड़ दें और आर्थिक रूप से अपने परिवारों को सहयोग करने लग जाएँ या फिर उनकी जल्दी शादी कर दी जाए। इसलिए यह ज़रूरी है कि शैक्षिक संगठन बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करने के वैकल्पिक और सुरक्षित तरीक़ों के बारे में सोचें।

डिजिटल लर्निंग — एक प्रभावी विकल्प?

डिजिटल लर्निंग को आजकल शिक्षा के एक वैकल्पिक तरीक़े के रूप में देखा जाता है। एनईपी 2020 में भी शिक्षा में टेक्नोलॉजी के उपयोग पर विशेष ध्यान और ज़ोर दिया गया है।

किन्तु हमारे जैसे विविधतापूर्ण समाज में वर्चुअल शिक्षा पर भरोसा करना हमारे बच्चों के हित में नहीं है। यह समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद नहीं करेगा क्योंकि शिक्षा का अर्थ केवल शिक्षकों से बच्चों तक सूचना का प्रसारण करना नहीं है। यह एक समर्थनकारी वातावरण में ज्ञान और कौशल प्राप्त करने का एक अनुभवात्मक और अन्त:क्रियात्मक तरीक़ा है। बच्चे और शिक्षक के बीच सामाजिक जुड़ाव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक आवश्यक

कारक है। यह महत्त्वपूर्ण तत्व वर्चुअल शिक्षा के तरीक़े में मौजूद नहीं होता क्योंकि इसमें शिक्षक और बच्चे एक-दूसरे से दूर रहते हैं।

इसका एक और नुक़सान यह है कि डिजिटल विभाजन असमानता को बढ़ावा देता है क्योंकि इसमें हमारे समाज के कमज़ोर वर्गों के बच्चे शामिल नहीं हो पाते। हम जिन समुदायों के साथ काम करते हैं उनमें से केवल दस से पन्द्रह प्रतिशत परिवारों के पास डिजिटल उपकरण हैं। यही नहीं ग्रामीण परिवारों में बच्चों को अक्सर घर पर पढ़ने के लिए जगह नहीं मिलती, क्योंकि परिवार बड़े होते हैं और घर छोटे। इन सभी बाधाओं के कारण हमने महसूस किया कि हम भविष्य में शिक्षा के इस तरीक़े को नहीं अपना सकते।

समावेशी शिक्षा की दिशा में छोटे क़दम

लॉकडाउन के दौरान हमने नियमित रूप से माता-पिता को फ़ोन करके बच्चों के साथ बातचीत की। उनके हाल-चाल जानना शुरू किया। हर बच्चे तक पहुँचना मुश्किल था क्योंकि जिन समुदायों के साथ हम काम करते हैं उनमें से कई लोगों के घरों में मोबाइल फ़ोन भी नहीं हैं।

जब लॉकडाउन में ढील दी गई तो हमारे शिक्षकों ने सरकार द्वारा अनुशंसित सुरक्षा उपायों का पालन करते हुए समुदायों का दौरा करना शुरू कर दिया। वे बच्चों और उनके माता-पिता से मिलने लगे। बच्चे अपने शिक्षकों को देखकर बेहद ख़ुश हुए। अभिभावक और बच्चे दोनों उत्सुकता से स्कूलों के फिर से खुलने का इन्तज़ार कर रहे थे। अभिभावकों ने माँग की कि हम उनके बच्चों को फिर से पढ़ाना शुरू करें ताकि उनके समय का रचनात्मक उपयोग किया जा सके। अभिभावकों और शिक्षकों के साथ इसकी व्यवहार्यता पर चर्चा करने के बाद, हमने बच्चों की शिक्षा फिर से शुरू करने का फ़ैसला किया।

सीखने की जगहें

जुलाई 2020 से हमने यानी— उदय सामुदायिक स्कूल ने — ग्राम समुदायों के भीतर सीखने की जगहें तय कीं और तभी से हम बच्चों के साथ जुड़ रहे हैं। विभिन्न आयु-समूहों के बच्चों के लिए उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं और सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं के आधार पर विभिन्न तरीक़े अपनाए गए।

प्राथमिक कक्षाएँ

7-14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए, गाँवों के भीतर अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा सामूहिक रूप से सीखने की जगहें तैयार की गईं। इन जगहों में बच्चे एक-दूसरे के साथ मिल-जुल सकते हैं, खेल सकते हैं, सीख सकते हैं और ख़ुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा

हम तीन से छह साल की आयु के उन बच्चों के साथ प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हैं, जो तीन उदय सामुदायिक पाठशालाओं और सवाई माधोपुर के फरिया एवं कटार गाँवों के दो सरकारी आँगनवाड़ियों में नामांकित हैं। हमारे शिक्षकगण अभिभावकों, ख़ासकर माताओं, के साथ मिलकर काम कर रहे हैं, ताकि बच्चों को ऐसी गतिविधियों में शामिल किया जा सके जो उनके गत्यात्मक और संज्ञानात्मक कौशल तथा मनो-सामाजिक विकास में मदद करती हैं। वे ऐसे कार्य तैयार करते हैं जिन्हें अभिभावक आसानी से समझ सकें और घर पर अपने बच्चों से उन्हें करवा सकें। शिक्षक लगभग आधे घण्टे से लेकर एक घण्टे तक अभिभावकों के साथ रहते हैं। इस दौरान वे पिछली गतिविधियों को देखते हैं और अगली गतिविधि साझा करते हैं।

हमारे शिक्षक बच्चों की पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं के बारे में भी अभिभावकों को बताते हैं। वे डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुशंसित उस वृद्धि निगरानी चार्ट का उपयोग करके बच्चों के विकास की जाँच करते हैं जिसमें बच्चों के अविकसित या छोटे क़द वाला होने और कम वज़न होने के स्तर को इंगित किया गया है। हमने इस प्रक्रिया में आँगनवाड़ी के शिक्षकों और सहायक नर्स मिडवाइफ (ऑक्सिलरी नर्स मिडवाइव्स – एएनएम) को भी शामिल किया है। शिक्षकगण कोविड-19 से व्यक्ति और परिवार के बचाव के लिए सुरक्षा उपायों और स्वच्छता के महत्त्व के बारे में भी बताते हैं।

जगनपुरा गाँव के एक बच्चे के वज़न की जाँच करते शिक्षक

एक माँ के साथ प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर चर्चा करते हुए शिक्षक

शैक्षिक सत्र

इन सत्रों के संचालन का उद्देश्य बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ इस कठिन समय के दौरान उनके मूल अधिकारों की रक्षा करना भी है।

तैयारियाँ

शिक्षकों ने अपना काम करने के लिए आठ से दस बच्चों के छोटे समूह बनाए। बच्चे स्थानीय ग्राम समुदायों से आते हैं और इसलिए उनके साथ जुड़ना मुश्किल नहीं था। हमने यह सुनिश्चित किया कि बच्चों को ज़्यादा दूर न जाना पड़े। गाँवों के भीतर खुली जगहों पर, जैसे किसी पेड़ के नीचे या एक खुली चौपाल/बरामदे में जहाँ हवा की आवाजाही और पर्याप्त रोशनी हो, हर दिन चार घण्टे के सत्र आयोजित किए जाते हैं। छोटे समूहों के साथ कम से कम एक मीटर की शारीरिक दूरी बनाए रखना आसान है।

समुदाय ने इन केन्द्रों में साबुन और पानी की व्यवस्था की है। शिक्षक और बच्चे दोनों कक्षाओं के दौरान मास्क पहनते हैं। अभिभावकों को घर पर बने हुए मास्क देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। बच्चे नाश्ता करके कक्षाओं में आते हैं। वे अपने साथ सीखने की किट, पानी की बोतल और बैठने के लिए चटाई लाते हैं ताकि उनके बीच कोई शारीरिक सम्पर्क न हो। हर 45-60 मिनट के बाद छोटे ब्रेक होते हैं और तब बच्चे और शिक्षक साबुन से हाथ धोते हैं। इन छोटी-छोटी बातों से बच्चों के साथ स्वच्छता और सुरक्षा-उपायों पर चर्चा करने के अवसर मिलते हैं और उनका पालन करने की आदत सुदृढ़ होती है।

अपनी टीम के साथ दैनिक गतिविधियों की समीक्षा साझा करने के लिए शिक्षक रोज़ाना उदय सामुदायिक पाठशालाओं में इकट्ठा होते हैं। बच्चों के साथ अपने काम की समीक्षा के आधार पर वे अगले दिन के लिए अपनी पाठयोजना तैयार करते हैं।

सुरक्षा उपायों के साथ बैठने की व्यवस्था

उदय स्कूल, फरिया में अपनी कार्यशील ठेला गाड़ी (पुल-कार्ट) के मॉडल को प्रदर्शित करता हुआ एक बच्चा

एकल-शिक्षक कक्षा

यात्रा के दौरान संक्रमण का ख़तरा अधिक हो सकता है। इस जोखिम को कम करने के लिए शिक्षक उसी गाँव में रहते हैं, जहाँ वे पढ़ाते हैं। प्रत्येक शिक्षक को एक समूह दिया जाता है, जिसके साथ वे हिन्दी, अँग्रेज़ी, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और कला सभी विषयों पर काम करते हैं। बच्चे घर पर सह-शैक्षिक गतिविधियों पर काम करते हैं जैसे कि रचनात्मक लेखन और कला। चूँकि एक समूह में सीखने के विभिन्न स्तरों वाले बच्चे होते हैं, इसलिए शिक्षक बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति को अपनाते हैं। उदय सामुदायिक पाठशालाओं

के विषय-शिक्षक अपने साथी शिक्षकों को सम्बन्धित विषयों के लिए पाठयोजना तैयार करने में सहायता करते हैं।

रचनात्मक लेखन

सीखने की प्रक्रिया तब तक प्रभावी नहीं होती जब तक कि वह वास्तविक जीवन के अनुभवों से जुड़ी न हो। चूँकि स्कूल बन्द हैं और बच्चे अपने घरों के भीतर तक ही सीमित हैं, तो इस दौरान प्रत्येक बच्चे को अलग-अलग और असामान्य अनुभवों से गुज़रना पड़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को अक्सर ख़ुद को व्यक्त करने के अवसर नहीं मिलते हैं। रचनात्मक लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ बच्चे और शिक्षक इस बात पर विचार-विमर्श करते हैं कि उन्होंने महामारी के दौरान क्या अनुभव किया है और अपने अनुभवों और विचारों को चिन्तन, कहानियों, कविताओं, गीतों और निबन्धों के रूप में साझा करते हैं।

मेरा तोता

अप्रैल का महिना था और लॉकडाउन चल रहा था। हमारे स्कूल का अवकाश चल रहा था। एक दिन, हमारे बाड़े में एक नीम का पेड़ है, उसमे एक तोता बैठा था। मेरी निगाह उस तोते पर पड़ी। मैंने उस तोते की तरफ हाथ उपर किया, लेकिन वह नही उड़ा और वह मुझे उदास-उदास सा दिख रहा था। एक बार मैंने फिर उसको उड़ाने की कोशिश की, वह नहीं उड़ा। मैंने धीरे-धीरे अपना हाथ उस तोते की ओर बढ़ाया। वह नहीं उड़ा इसलिए मैंने उसको पकड़ लिया। तोता मुझे उदास ओर बीमार सा लग रहा था। मैं उसको वहां से उठाकर घर ले आई। उसको एक कटोरी में पानी रखी, कुछ अनाज के दाने डाले। उसने एक-दो दाने खाये ओर उसी जगह पर बैठा रहा। मैं रोज उसको दाना–पानी रखती। वह दो-तीन दिन बाद धीरे–धीरे घूमने लगा। अब वह ठीक हो गया था। वह कही जाता नहीं था। धीरे–धीरे वह हमारा दोस्त सा बन गया। लेकिन कुछ दिनों बाद एक दिन वह गायब हो गया। हमने उसको तीन–चार दिन तक खूब ढूंढा, लेकिन वह नहीं मिला। मै अभी तक भी उदास हू क्योकि मुझे मेरा तोता नहीं मिला।

लाली गुर्जर, कक्षा 7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरिराजपुरा

ऊपर दी गई कहानी सातवीं कक्षा की बच्ची ने हिन्दी में लिखी है। इसमें उसने एक घायल तोते को बचाने के बारे में बताया है; जिसकी देखभाल वह तब तक करती है जब तक वह ठीक होकर उड़ नहीं जाता। इससे स्पष्ट है कि रचनात्मक लेखन से बच्चों को भाषा सीखने, रचनात्मक अभिव्यक्ति करने और भावनाओं को समझने में मदद मिलती है जैसे कि ऊपर दी हुई कहानी में वह लड़की अपने तोते के चले जाने पर दुख व्यक्त करती है। हम उनके लेखन को संकलित करके अपनी द्वि-मासिक बाल पत्रिका मोरंगे में प्रकाशित करते हैं।

सामुदायिक पुस्तकालय

स्कूल बन्द हैं और इसलिए बच्चे स्कूल के पुस्तकालयों का उपयोग भी नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए हमने अब सभी आयु समूहों के बच्चों को पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए समुदायों के भीतर पुस्तकालयों की स्थापना की है। बच्चे इन पुस्तकालयों को ख़ुद चलाते हैं यानी पुस्तकें देने, उनका रिकॉर्ड रखने और समय-समय पर नई पुस्तकें लाने के लिए शिक्षकों के साथ समन्वयन करते हैं।

उदय, फरिया में किताबें पढ़ते बच्चे

परियोजनाओं के माध्यम से सीखना

चूँकि महामारी के दौरान बच्चों के साथ जुड़ने के लिए काफ़ी कम समय मिलता है, इसलिए ख़ुद-ब-ख़ुद चीज़ों का पता लगाने और सीखने के अवसरों पर ज़ोर दिया जा रहा है। शिक्षक सुगमकर्ता की भूमिका निभाते हैं। बच्चे कई रचनात्मक परियोजनाओं के माध्यम से काम के साथ जुड़े हुए हैं, जैसे कि पुस्तक के लिए चित्र बनाना, रेस्तराँ स्थापित करना, कोविड को दूर रखने के लिए अपने घर के लिए कुछ नियम बनाना आदि। यह सभी गतिविधियाँ उनके जीवन-कौशल, विशेष रूप से समीक्षात्मक चिन्तन और सामूहिक कार्य को बेहतर बनाती हैं। हर बच्चा हर महीने औसतन तीन परियोजनाएँ पूरी करता आ रहा है। जब कोई परियोजना पूरी होती है तो अगली परियोजना बनाने के लिए बच्चों और माता-पिता दोनों से फ़ीडबैक लिया जाता है।

उदय सामुदायिक पाठशाला, गिरिराजपुरा, में बच्चों द्वारा तैयार की गई परियोजना 'रेस्तराँ'

लड़कियों को प्रोत्साहित करना

मौजूदा स्थिति के कारण किशोर लड़कियों के लिए सबसे अधिक जोखिम वाली स्थिति पैदा हुई है। चूँकि ज़्यादातर समय वे घर के काम करने में लगी रहती हैं, अत: उनके स्कूल छोड़ने की सम्भावना बहुत अधिक है और उनकी शादी हो जाने की सम्भावना तो और भी अधिक है। हम उन लड़कियों के साथ जुड़ रहे हैं जिन्होंने हाल ही में आठवीं कक्षा पास की है। उनके साथ उनके शैक्षिक एवं जीवन कौशल पर काम कर रहे हैं ताकि स्वतंत्र रूप से कार्य करने और निर्णय लेने की उनकी क्षमता को मज़बूत कर सकें। साथ ही उन्हें अपनी शिक्षा जारी रखने में मदद कर सकें।

स्वास्थ्य और सफ़ाई

स्कूलों के बन्द होने की वजह से खेलकूद की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है, जिसके चलते बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक-भावनात्मक विकास पर काफ़ी असर पड़ रहा है। समुदाय के अनुरोध पर हम प्रतिदिन दो से तीन घण्टे के लिए अपने स्कूल के खेल के मैदान खुले रखते हैं ताकि बच्चे वहाँ आकर खेल सकें। हमारे खेल के शिक्षक मैदान पर चल रही गतिविधियों की देखरेख करते हैं और बच्चों के लिए सुरक्षा उपायों का ध्यान रखते हैं।

शिक्षकगण कोविड-19 के प्रति समुदाय को सचेत करने की दिशा में काम कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में, वे बच्चों के साथ महामारी और इसके प्रसारण को रोकने के उपायों पर बातचीत कर रहे हैं। बच्चे बीमारी से बचाव के उपायों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए अपने आस-पड़ोस में अभियान चला रहे हैं।

टेक्नोलॉजी की सहायता से क्षमता-निर्माण

सख़्त लॉकडाउन के दौरान, टेक्नोलॉजी हमारे शिक्षकों की क्षमता-निर्माण प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने में एक वरदान साबित हुई। टेक्नोलॉजी के कारण शिक्षकगण सह-अधिगम के लिए एक-दूसरे से जुड़ सके और उन्होंने अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास पर आधारित कई वेबिनारों में भाग लिया।

निष्कर्ष

इन प्रयासों के कारण, लॉकडाउन और उसकी वजह से हुए व्यवधान के बावजूद, हम उदय सामुदायिक स्कूलों में नामांकित सभी 325 बच्चों और उन दो सरकारी आँगनवाड़ियों तक पहुँच पाए, जिनके साथ हम काम करते हैं। एक महीने से अधिक समय तक हमारा काम देखने के बाद सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक भी अपने स्कूलों से इसी तरह की पहल की माँग कर रहे हैं।

समुदाय के लोग यह देखकर ख़ुश हैं कि उनके बच्चे उनकी मौजूदगी में सीख रहे हैं और विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हैं। वे इस बात से भी सन्तुष्ट हैं कि जहाँ महामारी के कारण सरकारी स्कूल बन्द हैं, वहीं उदय सामुदायिक पाठशालाओं के शिक्षक इस चुनौतीपूर्ण समय में भी अनुशंसित सुरक्षा उपायों का मुस्तैदी से पालन करते हुए बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए काम कर रहे हैं।

** स्रोत: जनगणना डेटा 2011*
बच्चों की पहचान गुप्त रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

शुभम गर्ग ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के कार्यकारी निदेशक हैं। यह संस्था सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए ग्रामीण समुदायों के साथ काम कर रही है। शुभम ग्रामीण शिक्षा केन्द्र में संचालन, साझेदारी और क्षमता निर्माण कार्यों की देखरेख करते हैं। उन्होंने ग्रामीण प्रबन्धन संस्थान, आनन्द (IRMA) से ग्रामीण प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिग्री ली है। उनसे **shubham.garg@graminshiksha.org.in** पर सम्पर्क किया जा सकता है।

विष्णु गोपाल मीणा ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के अकादमिक समन्वयक हैं। उन्हें स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का बीस वर्षों का अनुभव है। उन्होंने उदय सामुदायिक पाठशालाओं की स्थापना और बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए खेलों का उपयोग करने में अहम भूमिका निभाई है। विष्णु ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित बच्चों की पत्रिका मोरंगे के सम्पादक भी हैं। उनसे **vishnu.gopal@graminshiksha.org.in** पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल